वैदिक विज्ञान की ओर.....

4

विश्वभर के सभी बन्धुओ एवं भगिनियो! हम मिलकर विचारें कि हमारे नाशवान् शरीरों का निर्माण एकसमान पदार्थ से हुआ है। पृथ्वी हम सबकी मां है, लेकिन यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में इतनी भी नहीं है, जितना समुद्र के सामने एक बूंद जल। यह हमारे अपने सौरमण्डल का छोटा सा ग्रह है। अपने सूर्य का मात्र 13 लाख वां भाग है, यह पृथिवी। हमारी मिल्की वे गेलैक्सी में हमारे सूर्य जैसे लगभग 200 करोड़ तारे हैं। इसके साथ ही इस ब्रह्माण्ड में हमारी जैसी लगभग 200 करोड़ गेलैक्सियां हैं। जरा सोचें कि इस ब्रह्माण्ड में हमारी पृथिवी की ही कोई गणना नहीं है, तब हमारे देशों, कथित सम्प्रदायों, जातियों अथवा कथित वर्गों की क्या स्थिति है? इसके पश्चात् हमारे शरीर की क्या स्थिति है? इस पर भी अज्ञानतावश हम अहंकार, काम, क्रोध, ईर्ष्या, हिंसा आदि के वशीभूत होकर स्वयं को बहुत बड़ा मान रहे हैं तथा दूसरों को सदैव नीचा गिराने का प्रयास करते रहते हैं। हम यह भी विचारें कि जहाँ हमारे शरीर एक पदार्थ से बने, वहीं हमारे शरीरों का रचयिता ईश्वर भी एक ही है। वही सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माता, संचालक व नियन्त्रक है। वही हमारा पिता, माता व गुरु है। तब, हम सब प्राणियों का पारस्परिक सम्बन्ध भाई-भाई वा बहिन-बहिन वा भाई-बहिन का रहा। तब, क्या हमें यह शोभा देता है कि हम परस्पर खून के प्यासे बनें।

मेरे मित्रो! यदि हम सृष्टि विज्ञान को यथार्थ रूप में समझ लेंगे, तब हमें इस सत्य का आभास अवश्य होगा। शोक है कि वर्तमान भौतिक विज्ञान हमें सृष्टि का यथार्थ ज्ञान नहीं करा पा रहा, यही कारण है कि वैज्ञानिक ऊँचाइयों को प्राप्त करके भी विश्व पारस्परिक कलह, आतंक, हिंसा, कामुकता, क्रोध आदि में जलता हुआ अशान्त व दुःखी है। सृष्टि के यथार्थ ज्ञान से सभी मानवों को सुख व आनन्द का मार्ग प्राप्त कराने का कार्य मेरी Vaidic Theory of Universe करेगी, ऐसी मैं आशा करता हूँ।

क्रमशः.....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक